एनडीए के सिर पर ताज

चुनाव प्रचार का दौर शुरू होने से पहले एनडीए की स्थिति हर तरह से मजबूत दिख रही थी। किसी तरह का असमंजस नहीं था। बीजेपी ने घोषित कर दिया था कि एनडीए के मुख्यमंत्री प्रत्याशी नीतीश कुमार ही होंगे।

राधा जोशी।।

बिहार में मतदाताओं ने बिहार का ताज एनडीए के सिर पर सजाया है। चुनाव प्रक्रिया शुरू होने के बाद से अब तक के हालात पर विचार किया जाए तो विभिन्न दलों की स्थिति में काफी उलटफेर नजर आता है। चुनाव प्रचार का दौर शुरू होने से पहले एनडीए की स्थिति हर तरह से मजबूत दिख रही थी। किसी तरह का असमंजस नहीं था। बीजेपी ने घोषित कर दिया था कि एनडीए के मुख्यमंत्री प्रत्याशी नीतीश कुमार ही होंगे। इसके बरक्स महागठबंधन में सब कुछ अव्यवस्थित और अनिश्चित नजर आ रहा था। लालू प्रसाद की कमी सबको खल रही थी। रघुवंश प्रसाद सिंह जैसे वरिष्ठ नेता की नाराजगी अखबारों की सुर्खियां बन रही थी। गठबंधन के घटक दल तेजस्वी को नेता मानने को तैयार नहीं थे। न केवल उपेंद्र कुशवाहा और जीतन राम मांझी की पार्टियों ने खुद को महागठबंधन से अलग कर लिया बल्कि गठबंधन की घोषणा के लिए आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में असंतोष जताते हुए वीआईपी पार्टी के सुप्रीमो मुकेश सहनी भी उठकर बीजेपी के साथ चले गए।

दिलचस्प बात यह कि चुनाव प्रचार जैसे–जैसे जोर पकड़ता गया, एनडीए की समस्याएं उजागर होने लगीं और महागठबंधन की कमजोरियां दूर होती चली गईं। लेफ्ट ने जहां इस गठबंधन को विचारधारा और काडर की शक्ति प्रदान की, वहीं कांग्रेस की मौजूदगी ने सवर्ण वोटरों की आरजेडी से पारंपरिक नाराजगी को न्यूट्रल करने में भूमिका निभाई। सबसे बड़ी बात यह रही कि गठबंधन के नेता के रूप में तेजस्वी ने अपना ध्यान इधर–उधर नहीं भटकने दिया। राजनीतिक विमर्श को जंगल राज, हिंदू–मुस्लिम और पाकिस्तान जैसे मसलों की तरफ ले जाने की कोशिशें हुईं, पर वे इस जाल में फंसे बगैर अपने अजेंडे पर टिके रहे। दस लाख सरकारी नौकरियां देने का उनका वादा पूरे प्रदेश में सभी तबकों के युवाओं के लिए बड़ा आकर्षण बनकर उभरा। स्थिति यह हो गई कि एनडीए के सीएम प्रत्याशी नीतीश कुमार द्वारा सार्वजनिक रूप से बार–बार इसे अव्यावहारिक बताए जाने के बावजूद बीजेपी ने अपनी तरफ से 19 लाख रोजगार देने का वादा पेश कर दिया।

चिराग पासवान अब तक एनडीए खेमे में थोड़ा–बहुत कन्फ्यूजन पैदा कर रहे थे, लेकिन दो प्रमुख पार्टियों बीजेपी और जेडीयू– के बीच यह पहली ऐसी दरार थी जो गठबंधन के औचित्य पर ही सवाल खड़ा कर रही थी।

आखिरी दौर में बीजेपी की ओर से योगी आदित्यनाथ ने सत्ता में आने पर घुसपैठियों को बाहर निकालने की बात कही तो नीतीश ने कह दिया कि किसी में दम नहीं जो ऐसा कर सके। इसके बाद भी अगर कुछ कसर रह गई थी तो नीतीश ने आखिरी दिन यह कहकर पूरी कर दी कि यह उनका अंतिम चुनाव है। तेजस्वी ने तत्काल इसको अपनी इस दलील की पुष्टि के रूप में पेश कर दिया कि नीतीश थक चुके हैं। बहरहाल, चुनाव प्रचार चाहे जैसा भी हो, है आखिर प्रचार ही। फैसला तो इस बात से हुआ कि मतदाताओं ने इन बातों का क्या मतलब समझा और बटन दबाने से पहले किस नतीजे पर पहुंचे।

बिछोह

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

जो श्रीराम देवी सीता को प्राप्त करने के लिए महान उद्योग कर महादेव का पिनाक भंग करते हैं, अपनी पत्नी के बिछोह में हा सीते कहते हुए वन वन भटकते हैं, जिन्होंने अपनी पत्नी के लिए १०० योजन समुद्र पर सेतु बांध दिया हो, जो श्रीराम अपनी पत्नी को वापस पाने के लिए वानर भालुओं की सेना इकट्ठा कर एक महाराक्षस से जा भिड़ते हैं, जो श्रीराम स्वयं अग्निदेव से अपनी प्रिय पत्नी को प्राप्त करते हैं, क्या आपको लगता है कि वही श्रीराम एक मूढ़ के कहने पर अपनी पत्नी का त्याग कर देंगे? जो स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जिन्होंने कठिन से कठिन समय में भी अपना धैर्य और धर्म नही छोड़ा, जिनके ज्ञान का कोई पार नही है और जिनके क्या आपको लगता है कि ऐसे श्रीराम को देवी सीता, जिनका स्थान सतियों में श्रेष्ठ है, के चरित्र पर कभी संदेह होगा? ऐसा सोचना ही हास्यप्रद है।

संपादकीय

चिराग को लेकर सस्पेंस

चुनाव में सरप्राइज फैक्टर रहा चिराग पासवान का नीतीश कुमार के प्रति बागी तेवर। राज्य में एनडीए से अलग होने के बावजूद चिराग अपने को बीजेपी और नरेंद्र मोदी के साथ बताते रहे है लेकिन नीतीश कुमार पर लगातार हमलावर रहे और उन्हें जेल तक भेजने की धमकी देते रहे। चिराग के इस नए अंदाज से राज्य में एनडीए वोटर के बीच उलझन साफ दिखी। जिसका सीधा नुकसान जेडीयू को उठाना पड़ा है। चिराग पासवान की पार्टी के अधिकतर उम्मीदवार बीजेपी के पूर्व नेता थे जिससे हालात और पेचीदा हुए। भागलपुर में तो जेडीयू सांसद खुलकर इसे बीजेपी की साजिश बताते सुने गए। हालांकि बीजेपी लगातार चिराग से दूरी बनाए रही। एनडीए घटक दलों के बीच बिखराव का कितना असर चुनावी नतीजों पर पड़ेगा यह देखना रोचक होगा। चिराग की रैलियों में भी अच्छी भीड़ देखी गई। उपेंद्र कुशवाहा, मायावती और ओवौसी की पार्टी ने भी चुनाव के दौरान गठबंधन बनाकर समीकरण को प्रभावित किया। उत्तर प्रदेश से सटी सीटों पर मायावती के प्रभाव के कारण इस गठबंधन ने दोनों मजबूत राजनीतिक गठबंधन के लिए बेचौनी पैदा की है। उपेंद्र कुशवाहा ने भी अपने इलाकों में मजबूत उम्मीदवार उतारे हैं। उधर सीमांचल में कम से कम 12 सीटों पर ओवैसी ने मजबूत मुस्लिम उम्मीदवार उतारे। इन सीटों पर 40 फीसदी से अधिक मुस्लिम वोटर हैं। इनकी रैलियों में भीड़ भी बहुत अधिक आई। पप्पू यादव का गठबंधन मधेपुरा,सहरसा जिले के कुछ सीटों पर अपना प्रभाव छोड़ने की कोशिश कर रहा है।

शुरुआत में तो एनडीए की तरफ से इस वादे का मजाक बनाने की कोशिश हुई लेकिन असर को भांपने के बाद लगभग सभी पार्टियां किसी न किसी रूप में युवाओं को रोजगार देना का वादा करती दिखीं।

बदलनी पड़ी रणनीति

नरेंद्र नाथ।।

बिहार में तीन चरणों में हो रहे विधानसभा चुनाव का शोर बुधवार को समाप्त हो गया। बिहार में एक बार फिर नीतिश की सरकार बनने जा रही है। एनडीए 125 और महागठबंधन 110 मत मिले। इस चुनाव में बीजेपी जेडीयू का बड़ा भाई बनकर उभरा है। इस बार बिहार विधानसभा का चुनावी प्रचार का यह सफर कई मायनों में अहम रहा। खासकर कोविड महामारी के बीच हो रहे चुनाव में कई नए प्रयोग और समीकरण देखने को मिले। तेजस्वी यादव के दस लाख युवाओं को नौकरी देने के वादे ने बेरोजगारी को चुनाव का एक बड़ा मुद्दा बना दिया। शुरुआत में तो एनडीए की तरफ से इस वादे का मजाक बनाने की कोशिश हुई लेकिन असर को भांपने के बाद लगभग सभी पार्टियां किसी न किसी रूप में युवाओं को रोजगार देना का वादा करती दिखीं। महागठबंधन का नेतृत्व कर रहे तेजस्वी यादव को राजनीत का नौसखिया माना जा रहा था लेकिन उन्होंने ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचने के लिए 250 से अधिक रैलियां कर एक रेकार्ड भी बनाया। कांग्रेस ने भी पूरी ताकत झोंकी और पार्टी के सीनियर नेता रणदीप सुरजेवाला के नेतृत्व में एक दर्जन से अधिक नेता तीन हफ्ते के दौरान राज्य में कैंप करते

रहे। पार्टी को गठबंधन में 70 सीटें दी गईं।

गठबंधन में लेफ्ट को जगह मिलने के बाद उसे भी खुद को राज्य में उभरने का एक मौका मिला है और खासकर माले का कॉडर इस बार जमीन पर सक्रिय दिखा। मध्य बिहार की कई सीटों पर माले का प्रभाव क्षेत्र रहा है। पहले दो चरणों की वोटिंग में कांटे की टक्कर के अनुमान के बाद तीसरे चरण के लिए सभी गठबंधनों ने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया है। तीसरे चरण वाले मतदान का बड़ा हिस्सा मुस्लिम बहुल माना जाता है। तेजस्वी यादव इस इलाके में दो दिनों तक कैंप करते रहे तो कांग्रेस ने अपना हेडक्वार्टर भी पटना से उठाकर पूर्णिया कर दिया। महागठबंधन की सबसे अधिक कोशिश मुस्लिम–यादव वोट बैंक आगे बढ़ाने की रही है। इसी वजह से तेजस्वी यादव सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की बात करते रहे हैं। प्रचार में लालू प्रसाद का नाम भी कम लिया गया और वे पोस्टर से दूर रखे गए। कुल मिलाकर विपक्षी गठबंधन नीतीश के पंद्रह सालों की एंटी इनकंबेंसी और रोजगार के मुद्दे को ही केंद्र में रखकर चुनाव लड़ता रहा।

जेडीयू और बीजेपी की अगुआई वाला एनडीए चुनाव में उतरा तो शुरू में उसकी जीत पर कोई संदेह नहीं था। मोदी और नीतीश की जोड़ी को अजेय माना जा रहा था। एनडीए को न तो एंटी इनकंबेंसी फैक्टर का असर दिखने का अंदाजा था और न ही तेजस्वी से परिपक्वता दिखाने की कोई आशंका थी लेकिन लेकिन चुनाव अभियान जैसे जैसे आगे बढ़ा, एनडीए को जमीनी हालात देखकर परेशानी का सामना करना पड़ा। एनडीए ने अपना प्रचार मूल रूप से केंद्र और राज्य सरकार के कामकाज पर ही केंद्रित किया। अभियान के दौरान एनडीए को अपनी चुनावी रणनीति भी बदलनी पड़ी। महागठबंधन के आक्रामक चुनाव अभियान को काउंटर करने के लिए आक्रामक तेवर अपनाने का फैसला हुआ। दूसरे चरण से ठीक पहले नरेंद्र मोदी की अगुआई में एनडीए ने जंगलराज की याद ताजा करते हुए तगड़ा हमला किया। फिर पूरा एनडीए विपक्ष पर हमलावर हुआ।

सूडोकु नवताल-5528

सरल

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

Jagrutidaur.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5527 का हल

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6

अपना ब्लॉग

वे कामयाब रहे हैं

मोहन। एनडीए की मूल चिंता अपने वोट बैंक के बिखराव को रोकने की रही है। रणनीति बदलने के बाद एनडीए नेताओं को भरोसा है कि वे अपने वोट बैंक का बिखराव रोकने में कामयाब रहे हैं। जो संदेश वे वोटर तक पहुंचाना चाहते थे, उसमें भी वे कामयाब रहे हैं। नीतीश कुमार ने महिला वोटरों को अपने पक्ष में बनाए रखने में पूरी ताकत लगाई। दूसरे चरण में महिलाओं का पुरुष के मुकाबले पड़े 6 फीसदी से अधिक वोट को एनडीए ने अपने पक्ष में माना। साथ ही अंतिम चरण में मुस्लिम बहुल सीटों पर ध्रुवीकरण के कारण एनडीए का मानना है कि उसे लाभ होगा। इसके पीछे हालिया ट्रेंड भी है जिसमें ऐसी सीटों पर बीजेपी उम्मीद से बेहतर करती रही है। कुल मिलाकर एनडीए ने शुरू में लड़खड़ाने के बाद संभलने का संदेश दिया। एनडीए की तरफ से यह उम्मीद भी की जा रही थी कि महागठबंधन का कोई न कोई नेता हिट विकेट होकर उसे बढ़त बनाने का मौका दे देगा।